

असली गुरु-दक्षिणा



अदिति/Introduction

हमारे समाज में अनेक ऐसे महान लोग हुए हैं जिन्होंने अपनी शिक्षा का सदुपयोग समाज की उन्नति और भलाई में किया। महर्षि दयानंद भी ऐसे ही एक महान व्यक्ति थे, जिन्होंने 'आर्य-समाज' की स्थापना करके समाज को एक नई दिशा दिखाई। एक निर्धन युवक दयानंद ने अपने गुरु विरजानंद को गुरु-दक्षिणा में उनकी पसंद की वस्तु लौंग अर्पित की, परंतु गुरु तो उनसे गुरु-दक्षिणा के रूप में समाज के उत्थान के लिए किया गया कार्य चाहते थे। उनका सम्मान करते हुए दयानंद ने अपना जीवन सबकी भलाई में लगाया और आगे चलकर महर्षि दयानंद के नाम से प्रसिद्ध हुए।

वेदों तथा व्याकरण के **महाज्ञानी** स्वामी विरजानंद मथुरा में यमुना नदी के किनारे रहते थे। **दृष्टिहीन** होने के बावजूद उनका ज्ञान बहुत **समृद्ध** था। स्वामी जी की महिमा सुनकर अनेक राजकुमार भी उनके पास शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते थे। एक दिन एक निर्धन लड़का उनकी कुटिया में पहुँचा और उनको **दंडवत** प्रणाम करके बोला, “मुझे अपना शिष्य बनाकर **अज्ञान** से भरे मेरे जीवन में ज्ञान का उजाला फैला दीजिए।”



शिक्षण संकेत

छात्रों को गुरुजनों का आदर व सम्मान करने के लिए प्रेरित करना।



बोध/Conceptual Understanding

- मथुरा में कौन रहते थे?
- उनके पास कौन पहुँचा और क्यों?



शब्दार्थ

वेद – हिंदुओं के आदि धर्म ग्रंथ (जैसे—ऋग्वेद, यजुर्वेद आदि) **महाज्ञानी** – वह जो बड़ा ज्ञानी हो
दृष्टिहीन – जिसकी आँखें न हों
समृद्ध – बहुत अधिक धन-संपत्ति वाला
दंडवत – सीधे होकर पृथ्वी पर आँधे मुँह लेटकर किया जाने वाला प्रणाम, साष्टांग नमन
अज्ञान – किसी बात से परिचित न होने का भाव

अधिगम उद्देश्य/प्रतिफल

- लक्ष्य प्राप्ति के लिए एकाग्र होकर परिश्रम करने की सीख देना।
- महापुरुषों के जीवन चरित्र व अनुभवों से सीख ले सकेंगे।

- समाज व आस-पास के लोगों के लिए कुछ करने के लिए प्रेरित होंगे।



बोध/Conceptual Understanding

- दयानंद बहुत लगन से क्या करते थे?
- विरजानंद जी कैसे स्वभाव के थे?
- उस लड़के का क्या नाम था?
- दयानंद सोच में क्यों पड़ गए?

स्वामी जी ने पूछा, “तुम्हारा नाम क्या है?” उत्तर मिला, “दयानंद।”

विरजानंद जी ने उसे अपना **शिष्य** बना लिया। दयानंद बहुत **लगन** से **अध्ययन** करते और साथ ही साथ गुरु की सेवा भी करते।

विरजानंद जी **क्रोधी** स्वभाव के थे। एक दिन दयानंद ने कुटिया की सफ़ाई करके कूड़े को एक जगह इकट्ठा कर दिया। अचानक विरजानंद जी का पैर उस पर पड़ गया। उन्हें क्रोधित देख दयानंद ने अपनी गलती के लिए उन से क्षमा माँगी। शिष्य की सच्चाई और विनम्रता देखकर उनका क्रोध शांत हो गया और उन्होंने उसे **क्षमा** कर दिया।

तीन वर्ष तक लगातार पूरी लगन और

मेहनत से अध्ययन करके दयानंद ने अपने गुरु से पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया। दयानंद की इच्छा थी कि गुरु से विदा लेने से पहले वे उन्हें **गुरु-दक्षिणा** दें परंतु अपनी निर्धनता के कारण वे सोच में पड़ गए। इतना धन तो था नहीं कि कोई मूल्यवान वस्तु लाकर गुरु के चरणों में दक्षिणा के रूप में डाल सकें। तो फिर क्या दें?

अचानक दयानंद को याद आया कि गुरु जी को लौंग बहुत अच्छी लगती हैं। उन्होंने भिक्षा माँगकर कुछ लौंग इकट्ठी कर ली और उन्हें गुरु जी के चरणों में रखकर कहा, “गुरुदेव!



शब्दार्थ

शिष्य - विद्यार्थी, चेला, शागिर्द **लगन** - किसी काम में पूरी तरह से ध्यान लगाना
अध्ययन - पढ़ाई **क्रोधी** - गुस्सेवाला **क्षमा** - माफ़ी **गुरु-दक्षिणा** - अध्ययन (शिक्षा ग्रहण) के बाद शिष्य द्वारा गुरु को दी जाने वाली दक्षिणा

आपने मुझे जो ज्ञान की **अमूल्य निधि** दी है, जीवनभर उसकी कीमत चुकाई नहीं जा सकती। उसके बदले मैं आपको कुछ दे नहीं सकता। आपके लिए कुछ लौंग लाया हूँ, स्वीकार कीजिए।”



बोध/Conceptual Understanding

- दयानंद ने अपने गुरु को दक्षिणा में क्या दिया ?
- विरजानंद जी के पास कैसी दौलत थी ?

गुरु ने दयानंद के सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद देते हुए कहा, “मैंने तो तुझसे कुछ और ही पाने की इच्छा की थी।”

दयानंद बोले, “गुरु जी आज्ञा दीजिए। धन तो नहीं दे सकता परंतु आप चाहेंगे तो मैं अपने प्राण भी आपके चरणों में न्योछावर करने को तैयार हूँ।”

विरजानंद बोले, “पुत्र! धन-दौलत का मैं क्या करूँगा। मेरे पास जो ज्ञान की दौलत है, उसे भी मैं अपने शिष्यों में बाँटकर प्रसन्न और संतुष्ट रहता हूँ। अगर तुम मेरी इच्छा से ही मुझे कुछ देना चाहते हो, तो मेरे लिए सच्ची गुरु-दक्षिणा यही होगी कि जो ज्ञान तुमने मुझसे प्राप्त किया है, उसे संसार में फैलाओ। लोगों को सच्चाई, प्रेम और भाईचारे के मार्ग पर चलने की शिक्षा दो।”

दयानंद ने गुरु की आज्ञा **सिर आँखों पर रखी**। वे ही आगे चलकर महर्षि दयानंद के नाम से **प्रसिद्ध** हुए। अपने गुरु की इच्छानुसार लोगों को सच्चाई, प्रेम और भाईचारे का संदेश दिया और ‘आर्य समाज’ की स्थापना करके इस बात का प्रसार किया कि इस दुनिया में सभी को ज्ञान प्राप्त करने का समान अधिकार है।



शब्दार्थ

- अमूल्यनिधि** - जिसका मूल्य आँका या लगाया न जा सके
सिर आँखों पर बैठाना - बहुत आदर सत्कार करना
प्रसिद्ध - जिसे बहुत से लोग जानते हों (वस्तु या व्यक्ति)
भाईचारा - दो व्यक्तियों में होने वाला आत्मीयतापूर्ण संबंध।



जीवन मूल्य

अपने बड़ों और गुरु के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रदर्शित करने का सबसे अच्छा और सार्थक तरीका है- उनकी दी हुई शिक्षा का अनुसरण करना।



अभ्यास (Practice)

(श्रवण, वाचन, पठन, लेखन पर आधारित)

(Based on Listening, Speaking, Reading, Writing Skills)



मेरे मुख से

(Listening and Speaking skill/श्रवण एवं वाचन कौशल)

(Oral Expressions/मौखिक अभिव्यक्ति)

श्रुतलेख/उच्चारण अभ्यास

निम्नलिखित शब्दों का सही उच्चारण कीजिए और उन्हें ध्यान से सुनकर सही-सही लिखिए—

दृष्टिहीन, दंडवत, दक्षिणा, निर्धन, अध्ययन, न्योछावर, प्रसिद्ध

निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए—

1. स्वामी विरजानंद जी के पास कौन शिक्षा प्राप्त करने आते थे?
2. दयानंद अध्ययन के साथ-साथ और क्या करते थे?
3. दयानंद ने स्वामी विरजानंद जी के पास कितने समय तक अध्ययन किया?
4. गुरु-दक्षिणा में दयानंद स्वामी जी के पास क्या भेंट लेकर गए?
5. दयानंद आगे चलकर किस नाम से प्रसिद्ध हुए?



मेरी कलम से

(Writing and Reading skill/लेखन एवं पठन कौशल)

(Written Expressions/लेखन अभिव्यक्ति)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अधिकतम दो वाक्यों में लिखिए।

1. स्वामी विरजानंद जी कौन थे, उनकी कर्मभूमि कहाँ थी?
2. दयानंद स्वामी विरजानंद जी के शिष्य कैसे बने?
3. दयानंद को अपनी किस गलती के लिए क्षमा माँगनी पड़ी?
4. स्वामी विरजानंद जी ने गुरु-दक्षिणा में दयानंद से क्या माँगा?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(VBQ/मूल्यपरक प्रश्न)

5. महर्षि दयानंद ने किन बातों का प्रचार-प्रसार किया?

दिए गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनिए—

(MCQs/बहुविकल्पीय प्रश्न)

1. गुरु-दक्षिणा से आप क्या समझते हैं ?

(क) जीवनभर गुरु की देखभाल करना

☐

(ख) गुरु की शिक्षा का प्रचार करना

☐

(ग) शिक्षा समाप्ति पर दी जाने वाली भेंट/उपहार

☐

(घ) गुरु को दी जाने वाली फ़ीस

☐

2. गुरु-दक्षिणा कब दी जाती है ?

(क) शिक्षा आरंभ करने से पहले

☐

(ख) शिक्षा की समाप्ति पर

☐

(ग) काम-धंधा शुरू होने पर

☐

(घ) हर महीने

☐


भाषा के रंग

(Language skill/भाषायी कौशल)

1. दिए गए शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए—

सक्षम ×अक्षम.....

इकट्ठा ×

स्वामी ×

स्वीकार ×

अज्ञान ×

अंधकार ×

प्रसिद्ध ×

अधिकार ×

2. पाठ पढ़कर सही विकल्प चुनिए और निम्नलिखित वाक्यों को पूरा कीजिए—

(क) दृष्टिहीन होने के बावजूद उनका ज्ञान बहुत था।

(ख) शिष्य की सच्चाई और देखकर उनका क्रोध शांत हो गया।

(ग) आपने मुझे जो ज्ञान की निधि दी है, जीवनभर उसकी कीमत चुकाई नहीं जा सकती।

(घ) अपने गुरु की लोगों को सच्चाई, प्रेम और भाईचारे का संदेश दिया।

(ङ) दुनिया में सभी को ज्ञान प्राप्त करने का है।

3. समझिए और इनका वर्ण-विच्छेद कीजिए—

पूर्ण — प् + ऊ + र् + ण् + अ

आशीर्वाद — + + + + + + +

कीमत — + + + + +

गुरु — + + +

महर्षि — + + + + + + +

दक्षिणा — + + + + + +

4. दिए गए वाक्यांश के लिए एक शब्द लिखिए—

जो महान ज्ञानी है —

गुरु के लिए दक्षिणा —

देवता समान गुरु —

दृष्टि से हीन —

जो कभी बूढ़ा न हो —

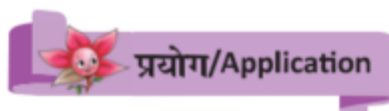
जो बीत गया हो —

विराम चिह्न— भाषा के लिखित रूप में विराम या रुकने के लिए जिन संकेत चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें विराम चिह्न कहते हैं।

- पूर्ण विराम का अर्थ है ठहरना, अर्थात् जहाँ वाक्य पूरा हो जाता है, तब वहाँ पूर्ण विराम लगता है।
- जिन वाक्यों में प्रश्न पूछने का भाव हो, उसके अंत में प्रश्नवाचक चिह्न (?) लगाया जाता है।

5. दिए गए वाक्यों में उचित विराम चिह्न लगाइए—

- (क) सभी नारे लगाने लगे भगत सिंह की जय (ख) जाओ इन्हें इनका कमरा दिखा दो
(ग) तुम क्या कर रहे हो (घ) उसे जगाओ मत सोने दो
(ङ) महर्षि दयानंद बहुत बड़े समाज सुधारक थे



कुछ करके सीखें

(Let us do and learn)

1. एक चार्ट पेपर पर अपने प्रिय शिक्षकों के नाम लिखो, यदि उनका चित्र मिल सके तो वह भी चिपकाओ। अब लिखो कि उन सबसे तुमने क्या-क्या सीखा। चाहो तो एक-दो पंक्तियों में यह भी बताओ कि वह अध्यापक तुमको क्यों प्रिय हैं? उसके पश्चात् इस चार्ट पेपर को कक्षा में सजाओ।
 2. तुम मेरी इच्छा से ही मुझे कुछ देना चाहते हो, तो मेरे लिए सच्ची गुरु दक्षिणा यही होगी कि जो ज्ञान तुमने मुझसे प्राप्त किया है, उसे संसार में फैलाओ। लोगों को सच्चाई, प्रेम और भाईचारे के मार्ग पर चलने की शिक्षा दो।”
- विरजानंद ने धन-दौलत को स्वीकार क्यों नहीं किया?
 - विरजानंद ने अपने शिष्य दयानंद को सच्ची गुरु-दक्षिणा के रूप में क्या करने को कहा?



खोजबीन/खोज कर जानें

यहाँ कुछ प्रमुख भारतीय समाज सुधारकों के नाम दिए गए हैं, इंटरनेट की सहायता से इनके बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए और प्राप्त जानकारी को अपने सहपाठियों के साथ बाँटिए—

- राजा राम मोहन राय
- स्वामी विवेकानंद
- ईश्वरचंद्र विद्यासागर



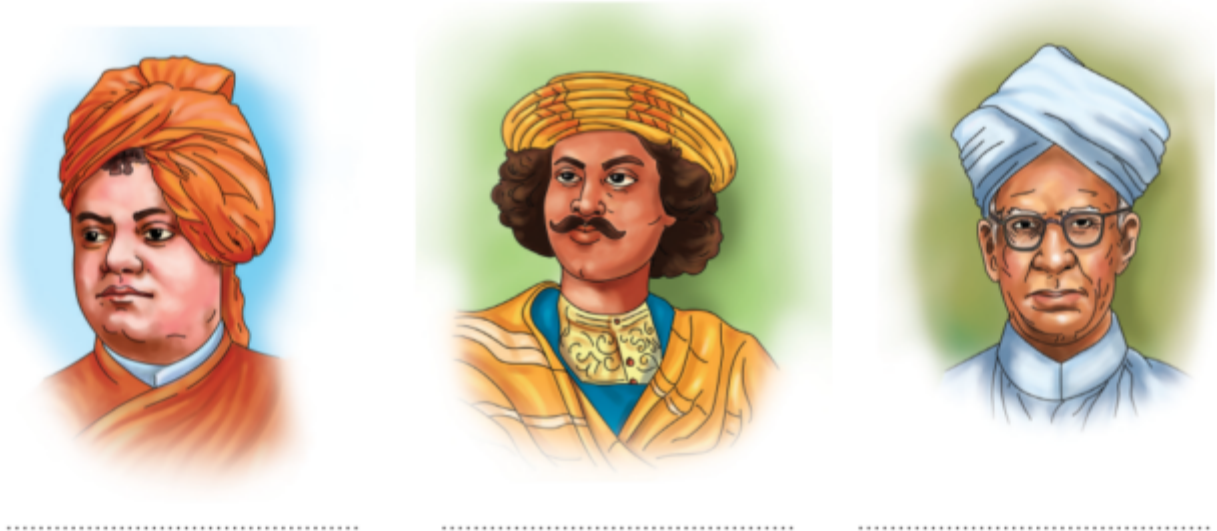
दिमाग के घोड़े दौड़ाओ

1. आपने अक्सर लोगों को उलटे-सीधे सवालों को पूछते हुए सुना होगा। अगर नहीं तो पता करके ऐसे सवालों के बारे में अपने साथियों को बताओ और क्या इस सरल लगने वाले उलझे सवाल का जवाब आप दे सकते हो—

एक अँधेरे कमरे में आप बंद हो गए हो। बहुत अधिक ठंड भी है। तुम्हारे पास एक माचिस है और कमरे में मेज़ पर एक मोमबत्ती, एक लालटेन और एक लकड़ी का टुकड़ा है। तुम सबसे पहले क्या जलाओगे ?

इसी तरह के सवाल आप भी साथियों से पूछो और मज़ा करो।

2. इन्हें पहचानिए और नाम लिखिए—



खुद की परख

Self assessment (Emotional Development)

पाठ को आपने पढ़ा। अब ज़रा सोचकर बताओ कि इसे पढ़ते हुए आपको कैसा महसूस हुआ ? नीचे दिए गए अनुभवों में से एक या अधिक का अपने हिसाब से चुनाव करो—

- अच्छा लगा ☐
- गुरु की महिमा को समझा ☐
- बोरियत हुई ☐
- ठीक-ठाक लगा ☐



भारत के रोचक तथ्य

(Knowledge of India)

26 सितम्बर, 1820 को जन्मे ईश्वरचंद्र विद्यासागर, जिनका असली नाम ईश्वरचंद्र बंदोपाध्याय था, बंगाल के प्रसिद्ध दार्शनिक, शिक्षाविद, समाज सुधारक, लेखक, अनुवादक, मुद्रक, प्रकाशक उद्यमी और परोपकारी व्यक्ति थे। वे संस्कृत भाषा और दर्शन के विद्वान थे, इसीलिए विद्यार्थी जीवन में ही संस्कृत कॉलेज ने उन्हें 'विद्यासागर' की उपाधि प्रदान की थी। वे बाल विवाह के घोर विरोधी और विधवाओं के पुनर्विवाह के समर्थक थे। उनके प्रयासों से 1856 ई. में विधवा-पुनर्विवाह कानून पारित हुआ। उन्होंने बांग्ला भाषा को सरल और आधुनिक बनाने के साथ-साथ संस्कृत भाषा का भी बहुत प्रचार-प्रसार किया। नारी शिक्षा के समर्थक होने के कारण उन्होंने बहुत सारे बालिका विद्यालयों की स्थापना की।

